पुल मोहोल दोऊ जवेर के

तुम देखो दिल में, अरवाहें जो अर्स।
हक देखावत नजरों, घड़नाले नेहेरें दस।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम दिल में विचार करके देखो। श्री राजजी महाराज तुमको जमुनाजी के दस घड़नालों की शोभा बतलाते हैं।

मेहेर करी मेहेबूब ने, मोहोल देखे ऊपर जोए।
ए सुख कहूं मैं किनको, मोमिन बिना न कोए।। २ ।।

श्री राजजी महाराज ने बड़ी मेहर की है जिससे जमुनाजी के ऊपर पुलों के महलों को देखा। यह सुख मैं किसको बताऊं? मोमिनों के अतिरिक्त इसे कोई देख ही नहीं सकता।

तले ताक अति सोभित, साम सामी बार।
जल छोड़े ना हद अपनी, निकसत सामी द्वार।। ३ ।।

दोनों पुलों के नीचे आमने-सामने दस दरवाजे (मेहराब) हैं जिनमें से जल अपनी सीमा के अन्दर लगातार बहता है।

नेहेरें आवत जिन द्वार की, निकसत सामी द्वार।
तले मोहोल के आए के, जल चल्या जात है पार।। ४ ।।

जिस दरवाजे से पानी आता है ठीक उसके सामने वाले पुल के दरवाजे से पानी बाहर निकलता है।

मोहोल पांचों भोम के, सोभित बराबर।
दोऊ तरफों देखत, पुल मोहोल पानी ऊपर।। ५ ।।

दोनों महल पांच भोम के हैं जो पानी के ऊपर एक जैसी शोभा देते हैं।

दोऊ मोहोलों बीच में, पानी तले आए निकसत।
ए मोहोल नूरजमाल के, जुबां कहा करे सिफत।। ६ ।।

दोनों पुलों के बीच में से पानी आकर निकलता है। यह दोनों पुल महल श्री राजजी महाराज के हैं। इनकी सिफत यहां बैठकर कैसे करें?

सामी अर्स द्वार के, बीच अमृत बन पाट।
तीन बाएं तीन दाहिने, ए बेवरा सातों घाट।। ७ ।।

रंग महल के दरवाजे के सामने अमृत वन के बीच में पाट घाट आता है। इस अमृत वन के तीन बाएं तथा तीन दाहिने, ऐसे सात घाट आए हैं।

लगता बट घाट के, चारों खूंटों चार हार।
सो चारों तरफों बराबर, दो जल पर दोए किनार।। ८ ।।

जमुनाजी के दोनों तरफ (अक्षरधाम और परमधाम) दो बट के घाट आए हैं जिनके चारों कोने बट के पुल के साथ लगते हैं। चार हारें पुखराजी रोंस के दो पेड़ों वाली आई हैं (दो परमधाम की तरफ दो अक्षरधाम की तरफ) उन चारों में दो जल पर और किनारे पर आए हैं।

और मोहोल घाट केल के, सो भी जिनस इन।
ए दोऊ मोहोल अति सुन्दर, करत साम सामी रोसन।। ९ ।।

केल के घाट की सीध में भी इसी तरह की महलों की शोभा बनी है। यह दोनों आमने-सामने झलकती हैं।

साम सामी थंभ झरोखे, और सामें बड़े देहेलान।
क्यों कहूं सिफत इन जुबां, जोए ऊपर मोहोल सुभान।। १० ।।

जमुनाजी के ऊपर दो पुल बने हैं जिनके आमने-सामने थंभ, झरोखा और दहलानें दिखाई देती हैं। जमुनाजी के ऊपर जो महल बने हैं उनकी सिफत इस जबान से कैसे कहूं?

चारों तरफों मोहोल छज्जे, तामें एक तरफ भया नूर।
तरफ दूजी अर्स अजीम, दोऊ तरफों जल जहूर।। ११ ।।

पुल के महल के ऊपर चारों तरफ छज्जे निकले हैं उनमें एक तरफ अक्षरधाम, दूसरी तरफ परमधाम और बाकी दोनों तरफ (उत्तर-दक्षिण) जमुनाजी का जल शोभा देता है।

पांच भोम छठी चांदनी, ए खूबी अति सोभित।
ए हद इन मोहोलन की, जुबां क्या करसी सिफत।। १२ ।।

इस पुल महल की पांच भोम तथा छठी चांदनी है। इसकी शोभा बेशुमार है। यह सारी सीमा शोभा इन दोनों पुलों के महलों की है जो यहां की जबान कैसे सिफत करें?

सात घाट बीच में लिए, दोए मोहोल दोऊ किनार।
पुल पूरे जल ऊपर, ले वार से लग पार।। १३ ।।

दोनों पुलों के महलों के बीच सात घाट शोभा देते हैं। पूरे पुल में से आर-पार जल बहता है।

दोऊ तरफों बिरिख अति सुन्दर, दोऊ तरफों मोहोल सुन्दर।
बीच जोए सातों घाटों, दस नेहेरें चलें अंदर।। १४ ।।

जमुनाजी के दोनों तरफ पूरब व पच्छिम दिशा में वृक्षों की शोभा है और उत्तर व दक्षिण में पुलों की शोभा है। दोनों पुलों के बीच सातों घाटों के सामने जमुनाजी दस घड़नालों में बहती है।

ए अर्स जिमी के जवेर, ए जवेर मोहोल नूर तिन।
जोत बीच आसमान में, मावत नहीं रोसन।। १५ ।।

यह परमधाम के जमीन के जवाहरात हैं, जिनसे पुल मोहोल बने हैं और इन महलों का तेज आसमान में नहीं समाता।

नूरतजल्ला नूर के, बीच में ए मोहोलात।
ए सुख बका के क्यों कहूं, इन मोहोलों खेलें हक जात।। १६ ।।

अक्षर ब्रह्म और परमधाम के बीच पुलों की मोहोलातें शोभा देती हैं। परमधाम के यह अखण्ड सुख हैं इन महलों में सखियां खेलती हैं।

हक ए सुख देवें हादी को, और देवें रूहन।
ए सुख अर्स अजीम के, क्यों कहूं जुबां इन।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी और सखियों को, यह अखण्ड सुख देते हैं। परमधाम के इन सुखों का वर्णन यहां की जबान कैसे करें?

महामत कहे ए मोमिनों, ए सुख अपने अर्स के।
एक पलक छोड़े नहीं, भला चाहे आपको जे।।१८।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह सुख अपने परमधाम के हैं। यदि अपनी भलाई चाहते हो तो इन सुखों को एक पल के लिए मत छोड़ो।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ९७८ ।।

पार जोए के बन खूबी
(जमुनाजी के किनारे पर वनों की शोभा)

पार जमुना जो बन, इसी भांत दिल आन।
दोरी बंध बन ले चल्या, डारी सब समान।।१।।

जमुनाजी के किनारे पर वनों की शोभा भी इसी तरह है। सभी पेड़ एक सीध में तथा सबकी डालियां एक समान शोभा देती हैं।

जहां लग नजरों देखिए, तहां लग एही बन।
जित जमुना तले आए मिली, देखो किनार एही रोसन।।२।।

जहां तक नजर से देखें इन वृक्षों की शोभा दिखाई देती है। यह पुल महल के किनारे तक शोभा देते हैं।

दोऊ किनारे बन सोभित, चल्या जल जमुना ले।
रोसनी न माए आकास लों, क्या कहे जुबां नूर ए।।३।।

दोनों किनारों पर वन की शोभा है जिनका तेज आकाश में नहीं समाता। यहां की जबान उसका कैसे वर्णन करे?

चल्या अछर के मोहोल लों, एकल छत्री नूर।
जैसा बन इत धाम का, ए भी तैसाही जहूर।।४।।

इस पुखराजी रोंस के वनों की छतरी की शोभा अक्षरधाम तक जाती है। जैसी शोभा इस तरफ है वैसी ही उस तरफ है।

मोहोल के पीछे फिरवल्या, जहां लों पोहोंचे नजर।
सब ठौरों एही रोसनी, कहां लों कहूं क्यों कर।।५।।

यह पुखराजी रोंस के पेड़ अक्षरधाम के चारों तरफ घेरकर आए हैं और सब जगह इनकी ऐसी ही शोभा है।

सुन्दर दरवाजा नूर का, रोसन झरोखे गिरदवाए।
नव भोम बिराजत, मोहोल रोसन रहे छिटकाए।।६।।

अक्षरधाम का नूरी दरवाजा, परिकरमा के झरोखे तथा नवों भोम की शोभा भी अति सुन्दर है।